नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

महाराज स्वाति तिरुनाल राम वर्मा द्वारा रचित हिन्दी भक्ति गीत

अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी
प्राचार्या, नाट्यवेदा कॉलेज ऑफ परफॉरमिंग आर्ट्स, त्रिवेंद्रम, केरल

सार-संक्षेप

एक समय में भारतीय उपमहाद्वीप के सुदूर दक्षिण के वर्तमान केरल राज्य का सबसे वैभव पूर्ण खण्ड त्रावणकोर कहलाता था जिसकी स्थापना सन् 1729 में मार्तंड वर्मा द्वारा की गई थी। उसी कुल में महान साहित्यकार एवं संगीतज्ञ महाराज स्वाति तिरुनाल राम वर्मा (16 अप्रैल 1813-26 दिसंबर 1846) हुए। यहाँ के कुलदेवता श्री पद्मनाभ (भगवान विष्णु) माने जाते हैं। त्रावणकोर के सभी राजाओं ने अपने आप को श्री पद्मनाभ का दास मानकर शासन किया। एक अनोखी परंपरा के अनुसार त्रावणकोर रियासत हमेशा से ही मातृसत्तात्मक रहा अर्थात यहाँ बेटियाँ शासन करती हैं एवं बेटियों के बेटे राजा बनते हैं। बालक राम वर्मा जन्म से पहले ही राजा घोषित हो चुके थे जिस कारण उन्हें गर्भ श्रीमान' भी कहा जाता है। तिरुनाल दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें तिरु का अर्थ श्री एवं नाल का अर्थ नक्षत्र होता है। राजपरिवार के नियमानुसार बच्चे जिस नक्षत्र में जन्म लेते है उसी नक्षत्र के अनुसार उनका नामकरण किया जाता है तदनुसार स्वाति नक्षत्र में जन्में बालक राम वर्मा महाराज स्वाति तिरुनाल कहलाए। प्रस्तुत शोध-पत्र में महाराज स्वाति तिरुनाल द्वारा रचित भक्ति गीतों का अध्ययन किया गया है। उनके द्वारा इन गीतों को विभिन्न रागों एवं तालों में बद्ध करने का उल्लेख भी किया है। प्रस्तुत विश्लेषण से तथ्यों का पुर्नआख्यान सम्भव होगा।

मुख्य शब्द : महाराणा स्वाति निरुनाल, हिन्दी भक्ति गीत, त्रावणकोर, केरल, संगीत

शोध-पत्र

साहित्यिक एवं सांगीतिक योगदान

आज से 200 वर्ष पूर्व त्रावणकोर राज्य में हिन्दी भाषा में भक्ति गीतों का लिखा जाना आश्चर्यजनक प्रतीत होता है दक्षिण भारतीय संगीत शैली में निपुण महाराज स्वाति तिरुनाल की संस्कृत एवं मलयालम भाषा में संगीतबद्ध रचनाएँ केरल एवं दक्षिण भारत के अन्य राज्यों में काफी प्रचलित हैं लेकिन अपने मात्र 33 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने कई भक्तिगीत लिखे जिनकी भाषा हिन्दी है। ऐसे 38 गीत अभी तक प्राप्त हुए हैं, जो श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र, देवी एवं शिवभक्ति से संबंधित हैं। यही नहीं उन गीतों को संगीतबद्ध करने के लिए आपने राग एवं ताल का भी उल्लेख किया है। कुछ गीतों में उन्होंने प्रबंध-विधा का भी उल्लेख किया है जैसे कि ख्याल, टप्पा, ध्रुवपद इत्यादि। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि इन भक्तिगीतों को विभिन्न विधाओं के अनुसार उसी छंद में लिखना यह दर्शाता है कि महाराज स्वाति तिरुनाल को हिन्दुस्तानी संगीत, एवं उसके साहित्यिक पक्ष की विशद जानकारी थी। हिन्दी भाषा में लिखे हुए इन गीतों में उन्होंने अपना उपनाम 'श्री पद्मनाभ प्रभु' लिखा है।

पद्मनाभ प्रभु फणी पर शायी, कबहूँ न जइयो चितवन से।
ऐसी लीला कोटी तुम्हारी नहीं कही जाए कविजन से।।

–महाराज स्वाति तिरुनाल

एक समय में भारतीय उपमहाद्वीप के सुदूर दक्षिण के वर्तमान केरल राज्य का सबसे वैभवपूर्ण खण्ड त्रावणकोर कहलाता था जिसकी स्थापना सन् 1729 में मार्तंड वर्मा द्वारा की गई थी। उन्नीसवी सदी के प्रारंभ में उसी कुल में महान साहित्यकार एवं संगीतज्ञ महाराज स्वाति तिरुनाल राम वर्मा का जन्म 16 अप्रैल 1813 को हुआ। इनकी माता रानी लक्ष्मी बाई एवं पिता राज राज वर्मा कोइत्तन्पुरान थे। एक अनोखी परंपरा के अनुसार त्रावणकोर रियासत हमेशा से ही मातृसत्तात्मक रहा अर्थात यहाँ बेटियाँ शासन करती हैं एवं बेटियों के पुत्र राजा बनते हैं। बालक राम वर्मा जन्म से पहले ही राजा घोषित हो चुके थे जिस कारण उन्हें गर्भ श्रीमान' भी कहा जाता है। इस राजपरिवार के कुलदेवता श्री पद्मनाभ (भगवान विष्णु) हैं। त्रावणकोर के सभी राजाओं ने अपने आप को श्री पद्मनाभ का दास (श्री पद्मनाभ दासा) मानकर शासन किया। स्वाति तिरुनाल नामकरण की भी अपनी एक विशेष परंपरा है जिसमें स्वाति एक नक्षत्र है एवं तिरुनाल दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें तिरु का अर्थ 'श्री' एवं नाल का अर्थ 'नक्षत्र' होता है। राजपरिवार के नियमानुसार बच्चे जिस नक्षत्र में जन्म लेते है उसी नक्षत्र के अनुसार उनका नामकरण किया जाता है तदनुसार स्वाति नक्षत्र में जन्में बालक राम वर्मा महाराज स्वाति तिरुनाल कहलाए। भाग्य विडंबना से पुत्र जन्म के 2 वर्ष बाद महारानी की आकस्मिक मृत्यु होने के कारण महारानी लक्ष्मीबाई की छोटी बहन

पार्वतीबाई ने शासन एवं राजकुमार रामवर्मा का अभिभावकत्व ग्रहण किया (आर. पी. राजा)। (चित्र-1)

चित्र-1: महाराज स्वाति तिरुनाल रामवर्मा

राज परिवार नियमानुसार परिवार के सभी संतानों की शिक्षा सबसे पहले संस्कृत भाषा से प्रारंभ होती थी। संस्कृत भाषा अन्य विषयों के माध्यम के रूप में भी पढ़ाई जाती थी। उस समय विविध भाषाओं में निपुणता एक राजपरिवार में राजा के लिए आवश्यक एवं विशेष योग्यता के रूप में माना जाता था। महाराज स्वाति तिरुनाल ने मुख्य भाषा संस्कृत एवं मातृभाषा मलयालम के अलावा तमिल, तेलगु, कन्नड़, मराठी, फारसी, अंग्रेजी एवं हिन्दी दखनी में निपुणता हासिल की थी। आपके संस्कृत एवं मलयालम के प्रथम शिक्षक हरीप्पाड़ किड़किदत कोच्चुपिल्ला वारियर थे। उनकी नियुक्ति 100 पणम / लगभग 15 रु प्रति माह वेतन पर हुई थी। उन्हे केरलीय परंपरा के काव्यादि की शिक्षा देने वालों में उनके पिता राजराज वर्मा कोइत्तन्पुरान (त्रावणकोर राजघराने की राजकुमारियों से विवाह करने वाले क्षत्रियों के लिए आदरबोधक शब्द) प्रमुख थे। राजकुमार स्वाति तिरुनाल को अंग्रेजी साहित्य गणित आदि विषय सीखने तथा प्रशासनिक कार्यप्रणाली से अवगत कराने के लिए तंजौरवासी श्री सुब्बाराव को तत्कालीन रेसीडेंट साहब एवं रीजेंट पार्वती बाई द्वारा नियुक्त किया गया। त्रावणकोर के शासकों के राजनैतिक संबंध मैसूर, तंजौर, दिल्ली, एवं पंजाब आदि राज्यों से रहे, अतः इन संबंधों को निभाने के लिए फारसी हिन्दुस्तानी तमिल तेलगु आदि भाषाओं में वर्तालाप करना व लिखना पढ़ना आवश्यक था। राजकुमार राम वर्मा को फारसी सिखाने के लिए मद्रास के मोइनूद्दीन साहब और मोहम्मद अली साहब राजमहल के उस्ताद नियुक्त किए गए थे। महल में द्विभाषिये भी नियुक्त थे एवं सेना के सिपाहियों में भी कुछ लोग हिन्दी भाषी थे। संभवतः इन सभी का सानिध्य राजकुमार राम वर्मा के हिन्दी भाषा के प्रति रुझान का कारण बना। राम वर्मा का बचपन से ही संगीत के प्रति झुकाव था। राजकुमार की संगीत शिक्षा राजमहल में नियुक्त संगीत विद्वानों द्वारा हुई जिनमें करमना सुब्रमन्य भगवतार प्रमुख थे। संकलित तथ्यों के अनुसार इन्हे लगभग 70 रु. प्रति माह वेतन पर नियुक्त किया गया था (अच्युत शंकर एस. नायर)।

राजकुमार राम वर्मा स्वाति तिरुनाल ने 1829 में 16 वर्ष की आयु में त्रावणकोर के राजा के रूप में पदभार संभाला और तुरंत ही ऐसे सुधार लाए जिससे भारत के दक्षिण क्षेत्र में आधुनिकता का आगमन हुआ। त्रिवेंद्रम वेधशाला, त्रिवेंद्रम सार्वजनिक पुस्तकालय, त्रिवेंद्रम चिड़ियाघर, त्रिवेंद्रम में सरकारी प्रेस, त्रिवेंद्रम में यूनिवर्सिटी कॉलेज (पहले महाराजा का निःशुल्क विद्यालय), चैरिटी अस्पताल, ये सभी स्वाति तिरुनाल के शासनकाल के दौरान अपने प्रारम्भिक स्वरूप में उभरे। केरल विश्वविद्यालय की ओरिएंटल पांडुलिपि पुस्तकालय का प्रारंभ भी स्वाति तिरुनाल का ही योगदान है। इस पुस्तकालय में अब उनकी कई मूल पांडुलिपियाँ हैं, जिनमें ताड़ के पत्ते और कागज दोनों शामिल हैं। उपरोक्त संस्थानों की सूची से ही यह स्पष्ट है कि उन्होंने त्रावणकोर में आधुनिक किस्म के वैज्ञानिक और शैक्षणिक संस्थानों के निर्माण का नेतृत्व किया। इस छोटे से राज्य में अपनी तरह के पहले संस्थान थे (अच्युत शंकर एस. नायर)। महाराज स्वाति तिरुनाल पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के ज्ञान के साथ-साथ भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षक रहे। श्री पद्मनाभ दास महाराज प्रतिदिन पुराण-श्रवण, दान-पुण्य, शास्त्रार्थ-श्रवण आदि के लिए समय देते थे। ललितकलाओं के संवर्धन में मुख्यतः काव्य एवं संगीत की साधना दिनचर्या का भाग हुआ करती थी। उन्हें केरल का भोजराज' तथा उनकी विद्वत्सभा को 'आदर्श विद्वत्सभा' कहा जाता था। कविगण, गायक, और नर्तक-नर्तकी आदि कला सेवक महाराज के दरबार में पुरस्कृत होते थे। महाराज स्वाति तिरुनाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड की मानद सदस्य थे। इस सोसाइटी के जर्नल ने 1847 में एक शोक संदेश प्रकाशित किया था जिसमें कहा गया था कि ''सच्चे विज्ञान के इस प्रबुद्ध और राजसी संरक्षक की असमय मृत्यु खेदजनक विषय है'' (अच्युत शंकर एस. नायर)। त्रावणकोर रियासत का एक मानचित्र जिससे वर्तमान केरल राज्य में स्थिति का पता चलता है। (चित्र-2, 3)

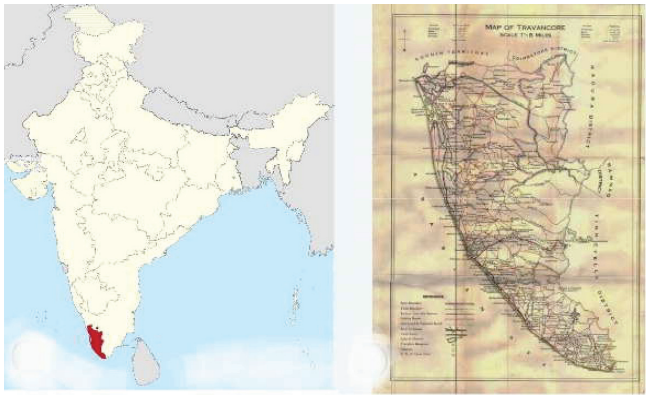

चित्र- 2, 3: त्रावणकोर रियासत का मानचित्र

दक्षिण के प्रसिद्ध गीतकारों (वाग्गेयकारों) में महाराज स्वाति तिरुनाल का सम्मानित स्थान है। संत त्यागराज, दीक्षितर, पुरंदरदास आदि की श्रेणी में स्वाति तिरुनाल को भी रखा जाता है। महाराज की साहित्य साधना उनके लिखे हुए कृतियों के संग्रहों द्वारा प्रमाणित है। इनके संस्कृत भाषा में लिखे गीत वर्षों तक त्रावणकोर के दरबारी गायकों द्वारा गाया जाता रहा है। महाराज की काव्य-कृतियों में संस्कृत भाषा की रचनाएँ ही अधिक हैं। जिनमें सर्वोत्तम स्थान 'भक्ति मंजरी' का है। 'अजामिलोपाख्यानम्' तथा 'कुचेलोपाख्यानम्म् महाराज स्वाति तिरुनाल रचित श्लोकों व गीतों का संग्रह ग्रंथ है। त्रावणकोर के कई मंदिरों में इन गीतों का प्रयोग 'नादस्वरम' वाद्य पर होता आ रहा है (विश्वनाथ अय्यर)। मोहिनीअट्टम नृत्य के लिए रचित पद्म (पदम) गीत विश्वभर में प्रसिद्ध है। कर्नाटिक शैली के कई सुप्रसिद्ध संगीतज्ञों ने महाराज के संस्कृत एवं मलयालम भाषी गीतों को स्वरबद्ध किया है जिनमें सेम्मनगुड़ी श्रीनिवास अय्यर, लालगुड़ी जयरामन, चेरतला गोपालन नायर, के. केदारनाथन आदि कुछ प्रमुख नाम हैं (अजित नंबूद्री)। नवरात्रि के समय होने वाले नवरात्रि उत्सवम् के हर दिन के लिए अर्थात प्रथमा से नवमी तक के लिए महाराज एवं अन्य विद्वानों द्वारा संस्कृत भाषा में लिखे एवं स्वरबद्ध किए गए भक्ति गीत (कृति) आज भी तिरुवनंतपुरम के पद्मनाभ स्वामी मंदिर परिसर में स्थित नवरात्रि मंडपम में गाया जाता है। महाराज स्वाति तिरुनाल ने नवरात्रि उत्सव तिरुवनंतपुरम के पद्मनाभ मंदिर के नवरात्रि मंडपम में सन् 1839 से प्रारंभ किया। इस कार्यक्रम की रूपरेखा उन्होंने स्वयं तैयार की। महाराज ने नवरात्रि के प्रथम दिवस से नवमी तक संस्कृत भाषा में 9 देवी भक्तिगीतों की रचना की जिसमें प्रथम 6 भक्तिगीत देवी सरस्वती से संबंधित एवं अंतिम तीन देवी दुर्गा से संबंधित है। इस संगीत उत्सव में कलाकार एवं श्रोता स्वरूप उपस्थित होने के लिए केरल के पारंपरिक वेशभूषा का होना आज भी आवश्यक है जिसमें पुरुष सफेद धोती एवं अंगवस्त्र एवं महिलाएँ साड़ी अथवा लहंगा-दावनी पहनती हैं। सुधि श्रोता कार्यक्रम आरंभ होने के 15 मिनट पहले उपस्थित होते हैं एवं कार्यक्रम-समाप्ति पश्चात ही मंडपम से बाहर जाया जाता है। इस कार्यक्रम में हिन्दू धर्म मानने वाले कलाकार एवं श्रोता ही उपस्थित हो सकते हैं। हर वर्ष इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध एवं गुणी कर्नाटिक शैली के कलाकारों द्वारा महाराज स्वाति तिरुनाल द्वारा निर्धारित राग में निबद्ध उनकी रचनाओं का गायन प्रस्तुत किया जाता है। नवरात्रि में महाराज स्वाति तिरुनाल द्वारा लिखित एवं स्वरबद्ध संस्कृत कृतियों का त्रावणकोर क्षेत्र के जनमानस पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। विगत लगभग 200 वर्षों से चल रहे इस परंपरा को वर्तमान समय तक उसी रूप में अक्षुण्ण रखना अद्भुत कार्य है। इन संस्कृत कृतियों को केवल तिरुवनंतपुरम के नवरात्रि मंडपम में ही नहीं अपितु कई देवी मंदिरों में गाया-बजाया जाता है जहाँ पर नवरात्रि के दौरान संगीत के कार्यक्रम होते हैं जैसे सरस्वती मंडपम, पूजापुरा; अट्टूकल देवी मंदिर, मनक्काड आदि। श्रोताओं के लिए इन भक्ति गीतों को सुनना, भक्ति भाव द्वारा आनंद प्राप्त कर मानसिक तनाव दूर करने का माध्यम है। एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि नवरात्रि के समय इन संस्कृत भाषी अलग-अलग रागों में स्वरबद्ध भक्ति गीतों को लगातार सुनने पर अद्भुत आनंद एवं तृप्ति की अनुभूति होती है जिससे उनके दिन-प्रतिदिन का मानसिक तनाव कम होता है, जिससे उन्हे ऊर्जा मिलती है एवं आत्मविश्वास बढ़ता है (अच्युत शंकर एस. नायर)। संगीत एवं सुरों के मानव हृदय पर प्रभाव के कारण ही योगशास्त्र एवं आयुर्वेद के ज्ञाताओं ने संगीत को जीवन शक्ति कहा है। अनेक विद्वान संगीत के चिकित्सकीय प्रभाव का विश्लेषण करते हुए मनुष्य शरीर में स्थित सप्त कुंडलिनी चक्र का उल्लेख किए हैं। सप्त कुंडलिनी के सहस्त्र दल के सबसे ऊपर के कमल चक्र को अमृत कुंड कहते हैं। विद्वानों ने सप्त कुंडलिनी के सहस्त्रार रस से संगीत का संबंध बताया है। संगीत मनुष्य की आत्मा को प्रसन्न करता है। इस प्रसन्नता से अमृतकुंड में जीवन रस फूट पड़ता है, हमारा मन उस रस का पान करता है एवं हृदय उसे रक्त द्वारा सारे शरीर में प्रवाहित करता है परिणामस्वरूप शारीरिक एवं मानसिक दोष जीवन शक्ति रूपी रस से पराजित होकर साम्य अवस्था में वापस आते हैं और रोग की शांति होती है (सतीश वर्मा)। वर्तमान समय में सामान्य जन-मानस को अपने कार्य क्षेत्रों में, प्रतिदिन की दिनचर्या में मानसिक तनाव आदि का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में सामान्य जन-मानस तथा शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं से ग्रसित लोगों के लिए लेखिका द्वारा संगीत चिकित्सा हेतु एक सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है एवं इस कार्य हेतु विभिन्न संस्थाओं में प्रायोगिक प्रशिक्षण द्वारा आंकड़ों के संचयन एवं संग्रहण का कार्य चल रहा है। महाराज स्वाति तिरुनाल का अलग-अलग भाषाओं एवं रागों में किए गए कार्य एक तरह से संगीत चिकित्सा का रूप है। वर्तमान में इस परंपरा को बनाए रखने के लिए संगीत शिक्षा के दौरान महाराज स्वाति तिरुनाल रचित संस्कृत भक्तिगीतों को सिखाने की परंपरा कायम है। पीढ़ियों से चल रहे इस परंपरा को संगीत चिकित्सा के रूप में अपनाया जाना चाहिए एवं इस विषय पर और भी विस्तृत कार्य किया जाना चाहिए। (चित्र-4)

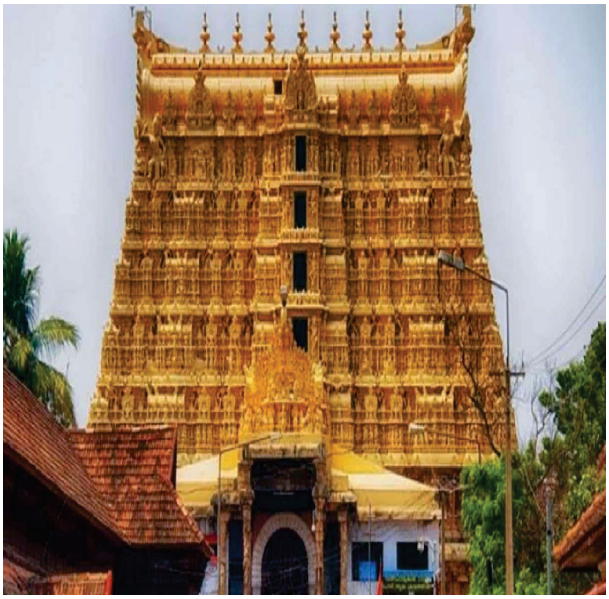

चित्र-4: पद्मनाभ प्रभु मंदिर, तिरुअनंतपुरम, केरल

नवरात्रि उत्सवम् में प्रस्तुत किए जाने वाले रागों एवं कीर्तनों की सूची दी जा रही है (स्वाति तिरुनाल)।

नवरात्रि उत्सवम् में प्रस्तुत किए जाने वाले संस्कृत भक्तिगीतों की सूची

नवरात्रि	भक्तिगीत	राग	ताल
प्रथमा	देवी जगज्जननी	शंकराभरणं	आदिताल
द्वितीया	पाहिमाम श्री	कल्याणी	आदिताल
तृतीया	देवी पावने	सावेरी	चेंबटा
चतुर्थी	भारती मामव	तोड़ी	चेंबटा
पंचमी	जननी ममव	भैरवी	आदिताल
षष्ठी	सरोरुहसन	पंतुविराली	आदिताल
सप्तमी	जननी पाही सदा	शुद्ध सावेरी	चाप
अष्टमी	पाही जननी	नाट कुरंजी	अड़ंता
नवमी	पाही पर्वत	आरभी	आदिताल

दक्षिण भारतीय संगीत शैली में निपुण महाराज स्वाति तिरुनाल की संस्कृत एवं मलयालम भाषा में संगीतबद्ध रचनाएँ केरल एवं दक्षिण भारत के अन्य राज्यों में काफी प्रचलित हैं लेकिन आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व त्रावणकोर रियासत में हिन्दी भाषा में भक्ति गीतों का लिखा जाना आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि में लिखे गए भक्तिगीत भारतीय संस्कृति के अमूल्य धरोहर हैं जिनका जन-सामान्य एवं हिन्दी साहित्यिक जगत में प्रचार-प्रसार होना अत्यंत आवश्यक है। ये हिन्दी भक्ति गीत महाराज स्वाति तिरुनाल द्वारा दिया गया हिन्दी भाषा के प्रति सम्मान एवं प्रेम का अमूल्य उपहार है साथ ही भारतीय एकता एवं अखंडता का प्रमाण है। अपने मात्र 33 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने कई भक्तिगीत लिखे जिनकी भाषा हिन्दी है। ऐसे 38 गीत अभी तक प्राप्त हुए हैं, जो श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र, देवी एवं शिवभक्ति से संबंधित है। यही नहीं उन गीतों को संगीतबद्ध करने के लिए आपने राग एवं ताल का भी उल्लेख किया है। इन हिन्दी भक्तिगीतों को आपने स्वयं स्वरबद्ध किया था या नहीं इसके कोई प्रमाण अभी तक नहीं प्राप्त हुए हैं। कुछ गीतों में उन्होंने प्रबंध-विधा का भी उल्लेख किया है जैसे कि ख्याल, टप्पा, ध्रुवपद इत्यादि। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि इन भक्तिगीतों को विभिन्न विधाओं के अनुसार उसी छंद में लिखना यह दर्शाता है कि महाराज स्वाति तिरुनाल को हिन्दुस्तानी संगीत, एवं उसके साहित्यिक पक्ष की विशद जानकारी थी। हिन्दी भाषा में लिखे हुए इन गीतों में उन्होंने अपना उपनाम 'श्री पद्मनाभ प्रभु' लिखा है। (चित्र 5)

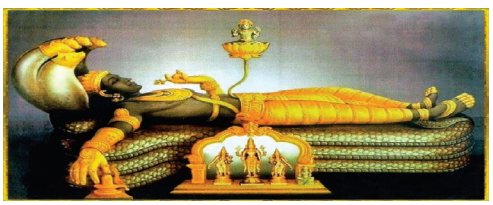

चित्र-5: पद्मनाभ प्रभु फणी परशायी

देवनागरी लिपिबद्ध मूल पांडुलिपि (संख्या T 2010) के कुछ पृष्ठ अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं–(चित्र 6)

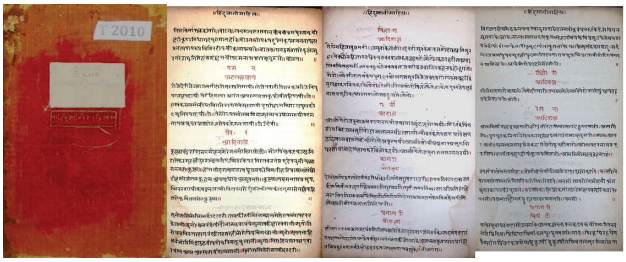

चित्र 6: मूल पांडुलिपि (संख्या T 2010) के कुछ पृष्ठ

मूल पांडुलिपि संख्या ळ 2010 के अनुसार महाराज स्वाति तिरुनाल के हिन्दी भक्ति गीतों की सूची (स्वाति तिरुनाल)

क्र.	हिन्दी भक्तिगीत	राग	ताल
1.	आज आए श्याम मोहन	यमन	अटताल
2.	आज उनींदे ठाड़े आए	बिभास	चौताल
3.	आए गिरिधर	भैरव	आदिताल
4.	अब तो बैरागिन	खमाज	आदिताल
5.	अबध सुखदायी	काफी	आदिताल
6.	आली मैं तो जमुना जल	पूर्वी	आदिताल
7.	आन मिलो महबूब हमारो	रेखता	आदिताल
8.	बाजत मुरली मुरारी	चरचरी	बिलन्दी
9.	बाजत बधाई	गौरी	आदिताल
10.	बंसी वाले ने मन	मोहनम	आदिताल
11.	भई लो पिया	सुरुट्टि	आदिताल
12.	ब्रज की छबि हो गई	बिहाग	चौताल
13.	चलिए कुंजन मों	सारंगा	चौताल
14.	देवन के पति इन्द्र	कानड़ा	चौताल
15.	एरी आली री गोरी	बिहाग	आदिताल
16.	गाफिल भई लो	झिंझोटी	आदिताल
17.	गोरी मत मारो	झिंझोटी	आदिताल
18.	जमुना किनारे	धनासीरि	चौताल
19.	जावो मत तुम	काफी	आदिताल
20.	जय जय देवी	यमन	अटताल
21.	कान्हा ने बजाई	झिंझोटी	आदिताल
22.	कान्हा कब घर	बिहाग	आदिताल
23.	करुणानिधान	हमीर कल्याणी	चौताल
24.	कृष्णचंद्र राधा मनमोहन	भैरवी	आदिताल

25.	महिपाल प्यारे	पूर्वी	चौताल
26.	मैं तो नहीं जाऊँ	बिहाग	आदिताल
27.	मिलिये श्याम प्यारे	खमाज	आदिताल
28.	नाचे रघुनाथ	धनासरि	बिलन्दी
29.	नन्द नंदन	धनासीरि	चौताल
30.	रामचन्द्र प्रभु	भैरव	आदि
31.	सावरो तेरी मुरली धुन	परज	चौताल
32.	संकर श्री गिरिनाथ	गौरी	आदिताल
33.	सीस गंग	धनासरि	चौताल
34.	सोहनिस्वरूपा	रागमाली	चौताल
35.	सुमरन कर	अटाना	आदिताल
36.	सुनो सखी मेरी	बिहाग	आदिताल
37.	उधो सुनिए	पूर्वी	चौताल
38.	विश्वेश्वर दर्शन	धनासीरि	बिलन्दी

उदाहरणार्थ–

1. *देवन के पति इन्द्र, तारा के पति चंद्र।*
   विद्या के पति श्री गणेश, दुःखभारहारी॥
   रागपति कान्हरा, बाजन के पति बीन।
   ऋतुपति है बसंत, रतिसुखकारी॥
   गिरिपति हिमाचल, भूतन के पति महेस।
   तीन लोक पति श्री पद्मनाभ गिरिधारी॥

इस गीत में महाराज ने देव, नर और प्रकृति में श्रेष्ट कौन है इसका वर्णन एवं वंदन करते हुए श्री पद्मनाभ भगवान विष्णु को तीनों लोकों का पति बताया है। इसमें उन्होंने राग कान्हरा एवं ताल चौताल लिखा है। यह भक्ति गीत वर्तमान में कर्नाटिक शैली में राग दरबारी कान्हरा में गाया जाता है। महाराज स्वाति तिरुनाल के हिन्दी भक्ति गीतों में यह एकमात्र गीत है जिसमें प्रथम पूज्य भगवान गणेश का उल्लेख है। वर्तमान त्रावणकोर राजपरिवार के साथ हुई चर्चा के अनुरूप इस भक्ति गीत के भावानुरूप ब्रह्म मुहूर्त (प्रातः कालीन) राग का चयन करते हुए मैनें हिन्दुस्तानी शैली के अंतर्गत राग भटियार में स्वरबद्ध किया है।[ ] चौताल अर्थात 12 मात्रा की छंदबद्ध पंक्तियाँ होने के कारण इसे हिन्दुस्तानी शैली के चौताल में ध्रुपद की तरह, एकताल में खयाल की तरह एवं दादरा में भजन की तरह प्रस्तुत किया जा सकता है।

2. *सीस गंग भस्म अंग, अरधंग गौरी संग*
   बरधा के वर तुरंग ताप भंग जग के॥
   सदा नंग भरा रंग, भूषण के भय भुजंग
   अठे चरम मृग मतंग, संग कीजों पग के॥
   हतानंग कृपापांग धारे हाथ विच कुरंग
   वास कीन्हों हृदय कमल पद्मनाभ प्रभु के॥

महाराज स्वाति तिरुनाल ने देवों के देव महादेव से संबंधित कुल 3 भक्ति गीत लिखे हैं। जिनमें से एक उपरोक्त गीत है। इस भक्तिगीत के शब्दों की गंभीरता को समझते हुए एवं राजपरिवार के साथ हुई चर्चा के उपरांत राग मालकौंस में स्वरबद्ध किया गया है। इसे चौताल में ध्रुपद अंग से एवं एकताल में खयाल अंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

3. *आली मैं तो जमुना जल भरणन गई*
   जब श्याम सुंदर सु भेंट भई॥
   मोरन के पिन्छ सीस विराजत
   बाँसुरी मो उपजत तान नई॥
   गौवन के संग क्षण धावे क्षण ठाड़े
   ग्वाल बाल से बोली बोले अमृतमयी॥
   सोई पद्मनाभ प्रभु फणी परशायी
   मोहे निहाल करे त्रिलोकदई॥

महाराज ने इस गीत में राग पूर्वी एवं आदिताल लिखा है उसी के अनुसार इस गीत को स्वरबद्ध किया गया है। आदिताल हिन्दुस्तानी शैली में तीनताल के समकक्ष है। अतः इसे तीनताल, कहरवा एवं अद्धा तीनताल में गाया जा सकता है।

4. *सुनो सखी मेरी मन की दरद री*
   जब फिरती मैं रंग महल में, सेज पलंग पर तड़के जाती।
   बेला चमेली दौना मरुआ, चंपई गुलाब की हार बनाती।
   जैसे जल बिन तरसत पंछी, तरस रही मेरो पिय बिन छाती।
   सोवत नाही लगे गोरी निद्रा, बीच बीच में पिया को बुलाती।

महाराज स्वाति तिरुनाल ने इस गीत में राग बिहाग एवं आदिताल पेंसिल से लिखा है। उन्होंने अपने संस्कृत एवं मलयालम गीतों में भी राग बिहाग का उपयोग किया है। राग बिहाग का कोई समकक्ष राग कर्नाटिक शैली में नहीं है। इस गीत में कवि ने अपने आप को ईश्वर की प्रेयसी मानकर वियोग श्रृंगार के भाव व्यक्त किए हैं। इस गीत में कवि ने अपना उपनाम नहीं दिया है। इस गीत को मैने हिन्दुस्तानी शैली राग बिहाग एवं कहरवा ताल में स्वरबद्ध किया है।

5. *आन मिलो महबूब हमारो*
   होऊँ तोरी दासी लाला नन्द कुँवर प्यारो॥
   अतर अबीर गुलाल लगाऊँ
   प्रेम कटारी से मोकु नहीं मारो॥
   पद्मनाभ प्रभु फणी परशायी
   कबहुँ नहीं मोकु नाथ बिसारो॥

इस भक्तिगीत में 'महबूब' एवं 'मोकु' शब्द दखनी, हिन्दुस्तानी भाषा का परिचय देते हैं। इसमें कबीरदास जी की रचना 'मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे' के शब्दों के साथ समानता दिखाई पड़ती है। विधा ख्याल, रेखता एवं ताल

आदिताल उल्लेखित है। अन्य गीतों में महाराज ने राग का नाम उल्लेख किया है। यहाँ पर रेखता किसी राग का नाम नहीं है ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि कर्नाटिक एवं हिन्दुस्तानी दोनों शैलियों में रेखता नाम से किसी राग की जानकारी प्राप्त नही हुई है। रेखता विभिन्न भाषाओं से लिए गए शब्दों से अलंकृत होता है। ऐसा संभावित है यहाँ पर रेखता शब्द का उल्लेख भाषागत भिन्नता के लिए किया गया है। रेखता का अर्थ मिश्रित भी होता है एवं हिन्दुस्तानी भाषा के प्रारम्भिक रूप को भी रेखता कहा जाता है (पद्म सिंह शर्मा)। इस गीत को मैने राग मधुवंती एवं ताल अद्धा तीनताल में स्वरबद्ध किया है।

महाराज स्वाति तिरुनाल के हिन्दी भक्तिगीतों की भाषा दखनी, संस्कृत, ब्रज एवं अक्खड़ी का मिला जुला स्वरूप है। भक्तिकालीन कवियों तुलसीदास, सूरदास, मीरा बाई एवं कबीरदास जी के लेखन का भावगत एवं भाषागत प्रभाव महाराज स्वाति तिरुनाल के लेखन में देखने को मिलता है। इनमें भावाभिव्यक्ति श्रृंगार, भक्ति एवं वात्सल्य भाव का निदर्शन होता है। ''मैं तो नहीं जाऊँ जननी, जमुना के तीर'' यह भक्ति गीत कृष्ण एवं माता यशोदा संवाद के रूप में लिखा गया है जो हिन्दी गीत संग्रह में वात्सल्य भाव का एकमात्र गीत है एवं सूरदास जी के ''मैं नहीं माखन खायो'' भजन से प्रभावित लगता है। उसी तरह रति भाव युक्त गीतों में उन्होंने अपने आप को ईश्वर की प्रेयसी के रूप में प्रभु पद्मनाभ को समर्पित किया है जो सूफी भाव से प्रेरित लगता है।

त्रिवेंद्रम में नवरात्रि संगीत उत्सव के अतिरिक्त स्वाति संगीतोत्सवम् नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता था। जनमानस के हृदय में एक विशेष स्थान रखता है। ''स्वाति संगीतोत्सवम् तत्कालीन राज्य सरकार एवं 'राम वर्मा महाराज ऑफ त्रावणकोर ट्रस्ट' के संयुक्त तत्वावधान में सन् 1994 से प्रारंभ हुआ। इस दस दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन सन् 2010 तक हर वर्ष 4 से 13 जनवरी के मध्य कुदिर मालिका महल के प्रांगण में किया जाता रहा। 2010 के बाद तत्कालीन राज्य सरकार ने स्वाति संगीतोत्सवम् केरल के अन्य शहरों में करना सुनिश्चित किया जिसका राजपरिवार द्वारा विरोध किया गया। यह मान्य है कि महाराज स्वाति तिरुनाल ने अपनी कई रचनाएँ इसी महल में रहते हुए लिखी थी। राजपरिवार का वक्तव्य था कि कुदिरमालिका महल एवं उसका प्रांगण दिव्य है साथ ही इस जगह का एक ऐतिहासिक महत्त्व है जो इस कार्यक्रम को और भी उपयुक्त बनाता है। सामान्य जनमानस की आस्था एवं भक्ति महाराज स्वाति तिरुनाल के साथ-साथ इस जगह के प्रति भी उतनी ही है। अतः राम वर्मा महाराज ऑफ त्रावणकोर ट्रस्ट ने तत्कालीन राज्य सरकार के अनुबंध से अलग होते हुए त्रिवेंद्रम में ही कुदिरमालिका महल के प्रांगण में स्वाति संगीतोत्सवम् 2020 तक जारी रखा। राज्य सरकार द्वारा सन् 1997 से हर वर्ष अलग-अलग विधाओं के श्रेष्ठ कलाकारों को स्वाति पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई जिसमें पुरस्कार राशि एक लाख रुपये के साथ स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र दिया जाता है। नवरात्रि संगीत उत्सव के कठिन नियमों के कारण सीमित कलाकारों एवं श्रोताओं की भागीदारी होती थी। स्वाति संगीतोत्सवम् में उत्तर भारतीय शैली अर्थात हिन्दुस्तानी संगीत के कलाकारों को भी आमंत्रण दिया जाने लगा। इस 7-9 दिवसीय कार्यक्रम में एक दिन उत्तर भारतीय शैली के गायन/वादन को स्थान मिला। लेकिन तत्कालीन सरकार ने किसी भी कलाकार को स्वाति तिरुनाल रचित भक्ति गीतों को प्रस्तुत करने के लिए बाध्य नहीं किया। कुछ कर्नाटिक संगीतज्ञ जिन्हे महाराज स्वाति तिरुनाल के भक्ति गीतों की जानकारी थी सिर्फ उन्ही कलाकारों ने अपनी अन्य प्रस्तुतियों के साथ महाराज रचित गीत गाया करते थे। नवरात्रि संगीत उत्सव की तरह इस कार्यक्रम में श्रोताओं को उपस्थित होने के लिए किसी भी नियम के पालन की बाध्यता नहीं रही। जनवरी 2020 तक यह कार्यक्रम होता रहा लेकिन उसके बाद कोरोना महामारी के कारण यह कार्यक्रम स्थगित हो गया और अभी तक राम वर्मा महाराज ऑफ त्रावणकोर ट्रस्ट द्वारा कुदिरमालिका प्रांगण में स्वाति संगीतोत्सवम् पुनः प्रारंभ नहीं हो पाया है।'' (राजकुमारी पार्वती लक्ष्मी बाई)

स्वाति संगीतोत्सवम् में देश के अनेक ख्यातिलब्ध कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं जिनमें मुख्यतः राजकुमार अश्वति तिरुनाल राम वर्मा, डॉ. एम. बालमुरली कृष्ण, पारशाला बी. पोन्नमल, उस्ताद बिस्मिल्ला खान, उस्ताद अमजद अली खान, पं. शिवकुमार शर्मा, संजय सुब्रमण्यम, रंजिनी-गायत्री, पं. विश्वमोहन भट्ट, मालाडी ब्रदर्स, टी. एम. कृष्णा, किरणवेली विद्याशंकर, पं. वेंकटेश कुमार, लालगुड़ी कृष्णन एवं विजयलक्ष्मी, पं. अजय चक्रवर्ती, अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी, पी. उन्निकृष्णन, एम. एस. शीला, अमृता वेंकटेश, मास्टर अभिलाष, कुन्नकुड़ी बालमुरली कृष्णा, प्रो. व्यंकटरामन आदि प्रमुख हैं। (राजकुमारी पार्वती लक्ष्मी बाई)। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि महाराज स्वाति तिरुनाल के हिन्दी भक्ति गीतों को उत्तर भारतीय शैली में सिर्फ दो कलाकारों ने प्रस्तुत किया है। जिनमें पं. अजय चक्रवर्ती ने खयाल गायन के साथ महाराज स्वाति तिरुनाल रचित एक हिन्दी भक्तिगीत की प्रस्तुति दी एवं अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी ने पूरा कार्यक्रम महाराज स्वाति तिरुनाल रचित हिन्दी भक्ति गीतों को समर्पित किया जिनमें उन्होंने 38 हिन्दी भक्ति गीतों में से 12 गीतों को हिन्दुस्तानी शैली में प्रस्तुत किया। (चित्र 6)

चित्र -7: अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी: स्वाति संगीतोत्सवम्, 2012

केरल राज्य सरकार द्वारा 1997 से 2020 तक स्वाति पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रमुख कलाकार सेम्मनगुड़ी श्रीनिवास अय्यर, उस्ताद

बिस्मिल्लाह खान, डी. के. पट्टम्मल, के. वी. नारायणस्वामी, टी. एन. कृष्णन, भीमसेन जोशी, शंकरण एमब्रनतिरि, मावेलिक्कारा प्रभाकर वर्मा, पं. जसराज, के. जे. येशुदास, एम. बालमुरली कृष्णा, वी. दक्षिणामूर्ति, एल. सुब्रमण्यम, नैयटिंकरा वासुदेवन, आर. के. श्रीकांतन, उस्ताद अमजद अली खान, त्रिशूर वी. रामचंद्रन, मंगद के. नटेशन, पाला सी. के. रामचंद्रन एवं डॉ. के. ओमनकुट्टी रहे।(द हिन्दू आर्काइव) (चित्र 7)

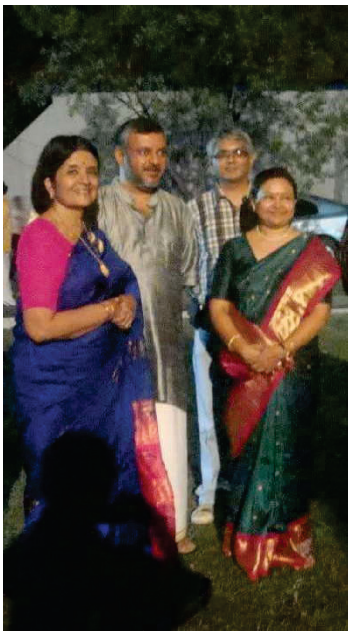

चित्र-8: राजकुमारी पार्वती लक्ष्मी बाई, पुत्र राजकुमार अश्वति तिरुनाल एवं अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी

चित्र-9 : राजकुमारी गौरी लक्ष्मीबाई से साक्षात्कार

आज से 200 वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के त्रावणकोर रियासत के महाराज स्वाति तिरुनाल द्वारा लिखे गए हिन्दी भक्ति गीतों का प्रचार-प्रसार देश-विदेश में होना चाहिए। त्रिवेंद्रम में वर्तमान समय में महाराज स्वाति तिरुनाल को समर्पित नवरात्रि संगीत उत्सव समारोह आयोजित किया जाता है जिनमें पूरे देश के प्रसिद्ध एवं गुणी कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। स्वाति संगीतोत्सवम् 2020 के बाद कोरोना महामारी के कारण स्थगित हो गया था जो आर्थिक एवं अन्य कारणों से अभी तक प्रारंभ नहीं हो पाया है। इस कार्यक्रम में 2012 में मुझे भी उनके हिन्दी भक्ति गीतों को हिन्दुस्तानी शैली में संयोजित करके प्रस्तुत करने का अवसर मिला था। लेखिका द्वारा उनके हिन्दी गीतों का संयोजन हिन्दुस्तानी शैली में तैयार किया जा रहा है जिनमें से 7 भक्ति गीतों का ध्वन्यंकन (एल्बम-करुणा निधान) 'सारेगामा' कंपनी और 4 गीतों का ध्वन्यंकन त्रिवेंद्रम दूरदर्शन द्वारा किया जा चुका है। शेष गीतों के संकलन एवं संयोजन का कार्य जारी है। ये गीत हिन्दी साहित्य के दक्षिण में विस्तार के साथ-साथ उत्तर भारतीय (हिन्दुस्तानी शैली) एवं दक्षिण भारतीय (कर्नाटिक शैली) के समन्वय का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसे सर्वव्यापी बनाने की और अधिक आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अश्वति तिरुनाल राम वर्मा (राजकुमार) से साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ति अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी, नवंबर 2011
2. अय्यर, विश्वनाथः महाराजा स्वाति तिरुनाल के हिंदी गीत, जय भवन कॉलेज लेन, त्रिवेंद्रम, 1963, पृ.-28
3. अजित नंबूद्री (कर्नाटिक शैली संगीतज्ञ) से साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ति अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी, 6 सितंबर 2024
4. अच्युत शंकर नायर, (पूर्व निदेशक, डिपार्ट्मन्ट ऑफ कम्प्यूटेशनल बायोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ केरला) से साक्षात्कार।
5. गौरी लक्ष्मी बाई (त्रावणकोर राजकुमारी) से साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ति अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी, 6 अगस्त 2024
6. द हिन्दू आर्काइव
7. पार्वती लक्ष्मी बाई (त्रावणकोर राजकुमारी) से साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ति अभ्रदिता मैत्रा बैनर्जी, 5 जनवरी 2025
8. Nair Achutashankar S.: Swathi Thirunal: A Composer Born to a Mother, The State Institute of languages, Kerala, Trivandrum, 2021, p-12-66
9. Raja R. P.: Swathi Thirunal, Through Trails of History, Dr. R.P. Raja, Manikantheshwaram, Trivandrum, 2021 p- 1-110
10. स्वाति तिरुनाल, नवरत्न मालिका, मूल पांडुलिपि T1950: Oriental Manuscript Library, Karyavattom, Trivandrum
11. स्वाति तिरुनाल, हिन्दुस्तानी साहित्यम्, मूल पांडुलिपि T 2010: Oriental Manuscript Library, Karyavattom, Trivandrum
12. शर्मा, पद्म सिंहः हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009, पृ- 27-31
13. वर्मा, सतीशः संगीत चिकित्सा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010, पृ-179.